B.A. (Part-III) Examination, 2019

हिन्दी साहित्य-तृतीय वर्ष (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

(निबन्ध तथा काव्यशास्त्र)

For Non-Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours Maximum marks : 100

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी। अत: परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:-

(क) क्रोध का वेग इतना प्रबल होता है कि कभी-कभी मनुष्य यह भी विचार नहीं करता कि जिसने दुख पहुँचाया है, उसमें दुख पहुँचाने की इच्छा थी या नहीं। इसी से कभी तो वह अचानक पैर कुचल जाने पर किसी को मार बैठता है और कभी ठोकर खाकर कंकड़-पत्थर तोड़ने लगता है। 10

अथवा

क्रोध सब मनोविकारों से फुर्तीला है। इसी से अवसर पड़ने पर वह और मनोविकारों का भी साथ देकर उनकी तुष्टी का साधक होता है। कभी वह दया के साथ कूदता है, कभी घृणा के। 10

(ख) पुरुषार्थ चार हैं-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इन्हीं पुरुषार्थों की प्राप्ति के उपाय बताने के लिए समूचा संस्कृत साहित्य लिखा गया है। जो कुछ भी इस साहित्य में पुरुषार्थों की प्राप्ति के लिए लिखा गया है, वह दुनिया के साहित्य में बेजोड़ हैं। जो कुछ कर्म फल का और ऋणों के चुकाने का निर्देश देने के लिए लिखा गया है, वह केवल समाजशास्त्री के कुतुहल का विषय है। 10

अथवा

संस्कृत यद्यपि बोलचाल की भाषा इस समय न रह गई थी, पर हर एक विषय के ग्रंथ इसमें एक से बढ़कर एक बनते गए और साहित्य की तो यहाँ तक तरक्की हुई कि कालिदास आदि कवियों की उक्ति मुक्ति के मुकाबिले वेद का भद्दा और रूखा साहित्य अत्यंत फीका मालूम होने लगा। 10

(ग) छायावादी काव्य मध्ययुग की काव्यधारा से प्रमुखत: इस अर्थ में भिन्न है कि वह किसी क्रमागत साम्प्रदायिकता या साधन परिपाटी का अनुगमन नहीं करता। आध्यात्मवादी काव्य का अधिष्ठान देशकालातीत परम पवित्र सत्ता हुआ करती है। व्ययशील सांसारिक आदर्शों तथा स्थितियों आदि से उसका मुख्य सम्बन्ध नहीं होता। 10

अथवा

सामंती समाज में पुरोहितों ने नारी मात्र को संस्कृति के चौके से बाहर कर दिया था। बहुत दिनों के बाद नारी ने इस चौके की सीमाएँ तोड़ कर साहित्य के क्षेत्र में पैर रखा। मध्यकालीन भारत में नारी जागरण की प्रतीक अमर गायिका मीरा हैं। 10

(घ) मुझे गुस्सा है, इस आईने पर। वैसे तो यह बड़ा दयालु है, विकृति को सुधारकर चेहरा सुडौल बनाकर बताता रहा है। आज एकाएक यह कैसे क्रूर हो गया। क्या इस एक बाल को छिपा नहीं सकता था। इसे दिखाए बिना क्या उसकी ईमानदारी पर बड़ा कलंक लग जाता ? 10

अथवा

कल बार-बार मनुष्य को उसके बाहरी बन्धनों, ऐतिहासिक छलनाओं और स्वयं उसकी अन्दरूनी भ्रान्तियों से मुक्त करवा के उसे वर्तमान में ले आती है। शाश्वत वर्तमान की क्रूर, किन्तु शान्त रोशनी में, उसके समूचे नंगे अस्तित्व की ओर- और यह कलाकृति को किसी भी समाज व्यवस्था में प्रासंगिक बनाने की सबसे प्रमुख और अनिवार्य शर्त है। 10

2. 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबन्ध में व्यक्त विचारों को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'संत साहित्य की ऐतिहासिक भूमिका' निबन्ध के आधार पर राम-विलास शर्मा की निबन्ध कला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 15

3. 'पहिला सफेद बाल' निबन्ध में निहित व्यंग्य को विस्तार से बताइये। 15

अथवा

'साहित्य में प्रासंगिकता का प्रश्न' निबन्ध के आधार पर निर्मल वर्मा के निबन्धों की भाषा शैली के स्वरूप और वैशिष्ट्य को बताइये। 15

4. अलंकार की परिभाषा देते हुए 'उपमा' एवं 'उत्प्रेक्षा' अलंकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

अथवा

भरतमुनि के रस सिद्धान्त की विभिन्न आचार्यों द्वारा दी गई व्याख्या को बताइये। 1

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए-

(i) छन्द की परिभाषा व अवयव। 7½

(ii) हरिगीतिका छंद का लक्षण व उदाहरण। 7½

(iii) गुणों के विविध प्रकारों का सोदाहरण वर्णन। 7½

(iv) लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्ति में भेद। 7½